तेजस्वी
बालक
तेजस्वी
भारत

- प्रवृत्ति द्वारा शिक्षा
- इन्द्रिय विकास के खेल
- सुटेवों का निर्माण
- जीवनव्यवहार
- राष्ट्रभक्ति
- प्राकृतिक आनंद

बालक अपने मूल रुप में आत्मा है परन्तु अभिव्यक्त होता है
शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और चित्त के रुप में

हम आपके बच्चे के
पंचकोशीय विकास के लिए प्रतिबद्ध है ।

अन्नमय कोश का विकास

शारीरिक वृद्धि एवं विकास,
बलवृद्धि, लवचिकता, निरामयता, तितिक्षा

प्राणमय कोश का विकास

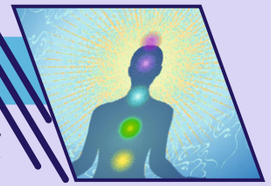

जीवनशक्ति, प्राणशक्ति, शरीर - मन संतुलन,
आवेग - संवेग नियंत्रण, चेतातंत्र की सक्रियता

मनोमय कोश का विकास

एकाग्रता, शांति, अनासक्ति,
निश्चयात्मकता, सद्गुण, सदाचार

विज्ञानमय कोश का विकास

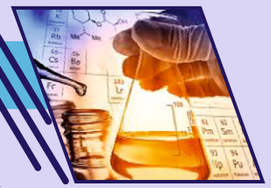

ग्रहणशक्ति, धारणाशक्ति,
स्मृतिशक्ति, कल्पनाशक्ति,
निरीक्षणशक्ति, विश्लेषणशक्ति, तर्कशक्ति

आनंदमय कोश का विकास

चित्तशुद्धि, आत्मतत्त्व साक्षात्कार, सर्जनशीलता,
त्याग, प्रेम - सौंदर्य - आनंद की अनुभूति, सेवा भावना

:: संपर्क ::
दिव्याबहन रावल (मो) ७९८४१३०९४५

शिक्षा यानी
श्रेष्ठ मनुष्य- निर्माण की प्रक्रिया
- हर्षद प्र. शाह
कुलपतिश्री ,चिल्ड्रन्स युनिवर्सिटी, गांधीनगर

प्रत्येक बालक महत्त्वपूर्ण है।

शिशुनिकेतन

The real pre-school

(माध्यम गुजराती उत्तम अंग्रेजी)

सर्वोत्तम मानव के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध
विद्यानिकेतन का पहला कदम....

जहाँ **शिक्षण** एक **उत्सव** है।

Children's University
Every Child matters
तेजस्वी बालक : तेजस्वी भारत

चिल्ड्रन्स युनिवर्सिटी

विद्यानिकेतन विभाग
(स्कूल ऑफ चाइल्ड यूथ एंड फेमिली डेवलपमेन्ट)
सुभाषचंद्र बोज़ शिक्षा संकुल
छ – ५ चिल्ड्रन्स यूनिवर्सिटी सर्कल नज़दीक
सेक्टर – २०, गांधीनगर, मो. : ९१०६५६७६०३
इ- मेईल – hod.vnk@cugujarat.ac.in
वेबसाईट - www.cugujarat.ac.in

शिशु - १
३ - ४ साल

शिशु - 2
४ - ५ साल

+.....

शिशुनिकेतन उपवन अर्थात्...

- बच्चों की परवरिश के लिये क्रिया और अनुभव आधारित शिक्षा
- बच्चों का सर्वांगी पंचकोशीय विकास
- बच्चों की शारीरिक ,मानसिक ,बौद्धिक और भावनात्मक क्षमताओं का विकास
- बच्चों की कल्पनाशक्ति ,रचनात्मकता और मौलिकता का विकास
- संस्कारक्षम वातावरण और पारिवारिक व्यवहार
- बच्चों के अभिभावकों का सघन प्रबोधन
- विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में आनंद, प्रेम, सौंदर्य, स्वतंत्रता और सहजता से एवं स्वविकास के बीज का आरोपण
- 'शिक्षा' जो बिना बोझ के सीखने के विचार को साकार करें

शिशुनिकेतन की विशेषताए...

- बालगीत
- वार्तालाप
- खेल
- बागकाम
  प्रकृति का परिचय
- उद्योग
- अभिनय गीत
- वार्ता
- योग
- दैनिक जिवनव्यव्हार
- चित्र
- संगीत
- नाटक
- श्लोक ,मंत्र
- साजसज्जा
- प्रयोग

(जीवनशिक्षा : जीवंत शिक्षा)

बच्चे की चेतना के दो केन्द्र 1) घर 2) विद्यालय

घर स्कूल जैसा और स्कूल घर जैसा लगे तो कितना मज़ा आए ! चिल्ड्रन्स युनिवेर्सिटी यानी बच्चों की विद्यापीठ । लक्ष्य : बच्चों का सर्वांगी विकास । सर्वांगी विकास यानी पंचकोशीय विकास । पंचकोशीय विकास यानी – शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास ।

बालक को सद्गुणी बनाना हे, श्रेष्ठ मनुष्य बनाना हे, उसके लिए हमारे पास दिशा और दृष्टि है ।

क्या आप अपने बच्चे को तेजस्वी बनाना चाहते हैं ?
क्या आप चाहते हो कि...

- **भारत को वैज्ञानिक और गणितज्ञ मिले ?**
- **राष्ट्र को उत्कृष्ट सूत्रधार मिले ?**
- **आपके परिवार को उज्ज्वल बनाये एसा कुलदीपक मिले ?**
- **धीर – वीर – संत –सिद्ध नर - नारी जैसे रत्न इस धरती पर अवतरित हों..**

ऐसी प्रतिभा को अवतरण करने की संभावना का स्थान अर्थात्

शिशुनिकेतन

The real pre-school

(शिशु निरंतर विकसित होने वाली आत्मा है ।)

बालक अनंत संभावनाओं और विशिष्टता के साथ जन्म लेता है । बालक की क्षमताओं को पहचानना और उनके विकास को सुगम बनाना उसका नाम शिक्षा । विकास की असीम और अंनत सीमाओं को स्पर्श करने की मनुष्य की अभीप्सा ही उसे क्षमता प्रदान करती है । पूर्णता को प्राप्त करने की मेहनत मनुष्य को पूर्णता की ओर ले जाती है । छोटी छोटी बातें पूर्णता की ओर ले जाती हैं और पूर्णता कोई छोटी बात नहीं है ! बच्चों को ऐसी जीवनलक्षी बातें सिखाने का समय आ गया है ।

अगर आप अपने बच्चे को ऐसी अमूल्य शिक्षा देना चाहते हो तो आज ही चिल्ड्रन्स युनिवर्सिटी के शिशुनिकेतन में अपने बच्चे का प्रवेश करवाये ।

इस वर्ष शिशु -1 और शिशु -2 की कक्षाएं शुरू हो गई हैं और अगले वर्ष से क्रमशः बालवाटिका एवं विद्यालय चलाये जायेंगे ।

चिल्ड्रन्स युनिवर्सिटी अनोखे विद्यालय का निर्माण करके शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति लाना चाहता है । इसके लिए आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ आपका बालक हमें सौंपे...

- हर्षद प्र. शाह
कुलपतिश्री ,चिल्ड्रन्स युनिवर्सिटी, गांधीनगर

(शिक्षा यानी श्रेष्ठ मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया ।)